जोराम यालाम नाबाम की चार कविताएं

(1)

उनका इस तरह आना

माँ कहती थी
"इन्द्रधनुष की तरफ ऊँगली मत करना
उँगलियाँ जल जाएंगी
रंग प्रकट हुए थे हमसे पहले"
आसमान रंगों से जब सजता है
लाल बीड्स की माला पहने
वहीं से
मेरी माँ अचानक झाँकती है
मुझको उनका इस तरह आना
बहुत अच्छा लगता है
मेरी साँसों का भीगना
आवाजों का टूटना
सब अच्छा लगता है।

(2)

अपनी कथाओं को रोज खंगाला करेंगे हम

इतिहास मिटाना है हमारा ?
पूर्वजों से उलझना है ?
अरे देखो
पर्वतों का अस्तित्व मिटाना है इन्हें !
जबकि
बादलों की संतानें रोज गाती हैं
जल से बना पत्थर
पत्थरों से बनी नदियाँ
नदियों से बने हम
और इस तरह
पत्थरों की संतान हैं हम
सुनो,
अपनी कथाओं को
रोज खंगाला करेंगे हम।

(3)

बारिश किसी रोज

युद्ध अपनों से ही हो
तो बेहतर है मौन
बादल की संतान हैं हम
बारिश किसी रोज
नई भाषा बरसाएगी
कोंपलें फिर फूट आएंगी
और हमने भी
सदियों इंतज़ार का वादा किया है ....

(4)

वे कभी नहीं मरेंगे

वे मारे गए लोग
मनुष्य के अहं से निर्मित युद्धों में
मनुष्यता से जबरन वंचित किए लोग थे
नागालैंड के पहाड़ों ने
उन्हें हृदय से लगा लिया
बादल माँ और नदी पिता हैं
फूल बन फिर उग आए
वे कभी नहीं मरेंगे ...

*(**लेखकीय परिचय:** जोराम यालाम नाबाम चर्चित कथाकार हैं। वर्तमान में राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं।)*